

हृदयेश के उपन्यास 'चार दरवेश' में वृद्ध जीवन की विसंगतियाँ

कु० इंदु रानी

शोधार्थी

डी० एन० कॉलेज, गुलावटी, बुलन्दशहर

Reference to this paper should
be made as follows:

Received: 13-04-26
Approved: 30-06-26

कु० इंदु रानी

हृदयेश के उपन्यास 'चार दरवेश'
में वृद्ध जीवन की विसंगतियाँ

Vol. XVII, Sp. Issue July.2026
Article No.15, Pg. 090-096

Similarity Check: 08%

Online available at
<https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-july-2026>

DOI: <https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI07.015>

सारांश

हृदयेश आधुनिक हिंदी कथा साहित्य के उन विरले साहित्य साधकों में से एक हैं जिन्होंने अपने लेखन में गाँव, कस्बे व शहर के बीच की खाई को पाटा है। आप स्वयं भी एक छोटे से कस्बे से जुड़े रहे हैं। इसलिए मध्यवर्गीय भारतीय समाज की जीवन स्थितियों से भली-भाँति परिचित रहे हैं। अपने समय व समाज से उनका यही जुड़ाव उनके लेखन का वर्ण्य विषय बना है। हृदयेश ने अपार मात्रा में साहित्य सृजन किया है। उनका साहित्य, उनके समाज की संवेदनाओं से आहत है। 'चार दरवेश' हृदयेश का बहुचर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास के चार वृद्ध पात्रों के माध्यम से हृदयेश ने आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धों की जीवन व्यथा व संघर्ष का मार्मिक विवेचन किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'चार दरवेश' उपन्यास में वर्णित वृद्ध जीवन की विसंगतियों को परत-परत उद्घाटित किया गया है।

मुख्य शब्द : हृदयेश, चार दरवेश, वृद्ध, जीवन, विसंगतियाँ आदि।

‘चार दरवेश’ हृदयेश का लोकप्रिय एवं बहुचर्चित उपन्यास है। उपन्यासकार हृदयेश ने अपने उपन्यास ‘चार दरवेश’ में वृद्धावस्था के जीवन में आने वाली समस्याएँ, परिवारिक संबंध और रिश्तों में आ रही गिरावट व बिखराव को दिखाया है। यह उपन्यास एक दारुण यथार्थ से हमारा साक्षात्कार कराता है। वस्तुतः ‘चार दरवेश’ उपन्यास वर्तमान समाज में बुजुर्गों की स्थिति और उनके जीवन के कटु यथार्थ पर आधारित है। वह उसे उद्घाटित ही नहीं करता बल्कि उसे उद्घेलित भी करता है। यह एक छोटा-सा गठा हुआ उपन्यास है। कथाकार हृदयेश की रचनाशीलता में अपने समय के ज्वलंत प्रश्न गूँजते रहते हैं। ‘चार दरवेश’ हृदयेश का महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास की कथावस्तु चार बुजुर्गों के ‘संध्या-समय’ का विश्लेषण करते हुए विकसित होती है। चारों वृद्ध कहने को तो अपने-अपने घर में रहते हैं, पर उनकी मिलन स्थली बनती है, शहर के बाहर की पुलिया, जहाँ वे दुनिया-जहान की बातें खुलकर करते हैं। इन चारों बुजुर्गों का संध्या-समय का विश्लेषण पाँचवां शर्खस करता है जो इनके इंतजार में शुरू से लेकर अंत तक रहता है। पाँचवां शर्खस कोई और नहीं स्वयं लेखक था जिसने वास्तविक वृद्ध पात्रों को लेकर उपन्यास लिखने का विचार बनाया था।

उपन्यास में रामप्रसाद गुप्ता, शिवशंकर, दिलीपचन्द और चिंताहरण शर्मा नाम के चार बूढ़ों की कथा के जरिए हृदयेश ने एक तरह से भारतीय समाज में मूल्यों के विघटन की कथा कही है। ये चारों बूढ़े एक जैसे न होकर अपनी प्रकृति और मिजाज में एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं, लेकिन अलग-अलग जीवन स्थितियों में रहते हुए भी उनकी नियति एक है। रामप्रसाद, शिवशंकर, दिलीपचन्द और चिंताहरण के पास अपने-अपने जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव हैं। युवावस्था की विविध स्मृतियाँ हैं जो किसी न किसी रूप में मानवीय मूल्यों पर ज़िद का परिणाम हैं। इन सबके साथ ये चारों व्यक्ति पूँजीवादी, लोलुप और बर्बर परिवेश का सामना कर रहे हैं। इन वृद्धों की चर्चा अखबार, टीवी-चैनल, हर दिन किसी नये पुराने जुर्म की अपने-अपने शब्दों में बखान करना और उन पर आपत्ति जताना होती है। यहाँ तक टीवी-चैनल किस प्रकार जुर्म को भी नमक मिर्च लगाकर पेश करते हैं, ये उस बात पर बड़ी गम्भीरता से विचार करते हैं। वह पुलिया उनके सुख-दुख को बाँटती है। सर्दी हो, गर्मी हो या बरसात हो, उस पुलिया से उनका संबंध रहता है और उसी पर बैठकर वो नये-नये किस्से छेड़ते हैं। इस विषय में लेखक लिखता है कि “अखबारों के पहले पृष्ठ पर अब क्राइम की खबरें मौजूद होती हैं। पहले इस पृष्ठ पर मुख्य खबरें दी जाती थी, राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय। अब अपराध की खबरें भी मुख्य का दर्जा पा गयी हैं। टीवी के सभी चैनल हर दिन किसी नये-पुराने जुर्म को अपने दर्शकों के आगे नमक-मिर्च लगाकर परोसते हैं। आरुषि हत्याकाण्ड को नये-नये कोणों से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने महीनों इस तरह पेश किया कि देशवासियों के लिए बस इसी खबर का जानना निहायत ज़रूरी है।”¹

‘चार दरवेश’ उपन्यास में चारों पात्रों की अपनी नियति है। रामप्रसाद अपने घर में बेटी-दामाद के साथ रहते हैं। पत्नी की मृत्यु से पहले ही बेटी और दामाद उनके यहाँ रहने के लिए आ गए थे। शुरुआत में सब कुछ ठीक चला किंतु धीरे-धीरे मन-मुटाव होता गया। “अपने को इतना बाँधना-सँभालना मुश्किल होता जाता है। लगता है कि हम किरायेदार हैं और वे लोग मकान-मालिक।” “हमारे पीछे वही मालिक होंगे।” “पीछे वही मकान-मालिक होंगे का तुम्हारा बार-बार कहना मेरी छाती पर घूँसे जैसा पड़ता है। अभी हम जिन्दा हैं। हमीं मकान-मालिक है।”² उनके गुस्से पर छींटे मारने के लिए पत्नी ने एक मिनट बाद कहा, “पूरे घर की बिजली का बिल जमाई बाबू देते हैं।” “उनके पास दो पंखे हैं— एक सीलिंग फैन, एक टेबिल फैन, फ्रिज है। तीन-चार बत्तियाँ भी जलाते हैं। हमारे पास सिर्फ एक पंखा है और कमरे में चालीस वाट का यह एक बल्ब हमारा खर्चा ही कितना है जो बिजली का बिल देने की तूने बात कही?”³ पत्नी की मृत्यु के बाद तो दामाद की नजरों में ससुर की अहमियत समाप्त हो गयी। “तेरा बाप हरदम ततैया मिर्च बना रहता है। शिकवा-गिला के अलावा कुछ जानता नहीं। वह भी तो घर से बाहर निकलता है। साँझ को जब बैठकबाजी से लौटता है तब किसी बिजली वाली दुकान से क्यों नहीं बल्ब ले लेता है? सो क्यों? अपनी पैट से दस-बारह रुपये जो ढीले करना पड़ेंगे। बुढ़ा चालाक कौवा है।”⁴ अपने ही घर में वे एक निर्वासित और उपेक्षित जीवन जीने को मजबूर हो

जाते हैं। अपने ही घर में मर्जी के मुताबिक न जी पाना और छोटी-छोटी इच्छाओं-जरूरतों की पूर्ति न होना उनकी त्रासदी को और अधिक बढ़ा देता है।

पुत्री और दामाद ही नहीं बल्कि धेवते की नजर भी उनके धन पर है। "पाँच कदम आगे निकलकर बिला आवाज़ के बड़बड़ाये, "बाप-बेटे दोनों की मेरे पैसों, मेरी जायदाद पर गिद्ध जैसी नज़र है। सगे होकर भी नीयत में खोट है, अनसगों की तरह।"⁵ पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी की जीवनस्थिति और सोच को उपन्यासकार ने साथ-साथ रख दिया है जिससे जीवन मूल्यों की पूरी तस्वीर खुद-ब-खुद उभरकर सामने आ जाती है। रिश्ते उपहास बनकर रह गए हैं। "मशीनों और सुख-सुविधा के लिए आविष्कृत संवेदनशून्य उपकरणों की संगत में इंसान के लिए एकमात्र सचेतता व सक्रियता उपयोगी और अनुपयोगी का स्वीकार अस्वीकार हो गया है। जो कभी काम की चीज़ थी अब काम की न रहकर फालतू हो गयी है। इसे निकालो, इसे हटाओ।" "तभी आज की पीढ़ी के लिए पुरानी पीढ़ी के लोग काम के न रहने पर बाहर निकाल दिया जाने वाला सामान बन जाते हैं।"⁶ अपने दामाद की जली कटी सुनकर वो बहुत दुखी होते थे, घर भी उन्हीं का था तब भी उन्हें ही जली-कटी सुनाई जाती थी और वह दुख बढ़कर तब दोगुना हो जाता था जब उनकी ही पुत्री गलत बातों में भी अपने पति का साथ देती थी।

बेटी-दामाद के रवैया को देखकर वे परेशान होते थे। इतना ही नहीं जब वो ज्यादा परेशान हो जाते थे तो अपनी पत्नी की फोटो की ओर मुँह करके रोने लगते हैं। "तुम मुझे बहुत जल्द छोड़कर चली गयीं। मैं एकदम अकेला पड़ गया हूँ। मेरा अपना कोई नहीं है। अपनों की नज़र में मेरा दिमाग फिर गया है। घर कहने को बस मेरा है। मेरी दशा लद गये मेहमान से भी बदतर हो गयी है। समझ में नहीं आता कि मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ? जी बहुत घबराता है।"⁷ एक बार शाम को घर आते वक्त उन्हें एक कुत्ता काट लेता है। बेटी और दामाद उनका इलाज तक नहीं कराते। रोज-रोज की बातों से उनका मन भर गया अब उन्हें भी जीवन से मोह नहीं रहा। मित्रों के कहने पर भी वे इंजेक्शन नहीं लगवाते, इस पर वो कहते हैं "नहीं लगवाया है तो ज़्यादा-से-ज़्यादा होगा यह कि मैं मर जाऊँगा। ज़िन्दगी से अब मुझे कोई मोह नहीं है।"⁸ और अंततः इलाज न करा पाने के कारण उनकी दर्दनाक मृत्यु हो जाती है। रातभर कमरे से मद्धिम, तेज रिरियाने और भाँ-भाँ की आवाज़ आती रहती है। "कुत्ता काटने से पैदा रेबीज से पहले ही उनको अपने बेटी दामाद के काटे से पैदा रेबीज हो चुका था। अपनों के काटे से पैदा रेबीज की पीड़ा ज़्यादा तकलीफदेह होती है, असह्य बनती किस्म की, और व्यक्ति अपनी मृत्यु की कामना करने लगता है।"⁹ यहाँ देखा जाए रामप्रसाद मानसिक रूप से तो काफी पहले ही मृत हो चुके थे, अंत में शारीरिक रूप से हुए।

माँ-बाप बच्चों के भविष्य के लिए उन्हें बाहर पढ़ने तो भेज देते हैं, किंतु वे वहीं के होकर रह जाते हैं। कभी-कभी फोन कर लेते हैं या कुछ दिन छुट्टियाँ बिता कर चले जाते हैं। सम्पर्क भी इसलिए रखते हैं, ताकि उनके माँ-बाप अपनी वसीयत का किसी और को मालिक न बना दे। केवल अपने स्वार्थ साधने के लिए वो उनसे मतलब रखते हैं, माँ-बाप से तो अपने आप को दूर रखते ही हैं साथ ही उनके बुढ़ापे के सहारे अर्थात् पोता-पोती को भी दूर कर देते हैं। हृदयेश ने बुजुर्ग होते पिता की यही दशा उपन्यास के दूसरे वृद्ध पात्र शिवशंकर के माध्यम से उजागर की हैं। शिवशंकर, रामप्रसाद गुप्ता से डेढ़-दो वर्ष बड़े जरूर थे किंतु सीधी-सतर काया वाले, बच्चे उनकी जान थे, शाम को बाहर वृद्ध मित्रों से मिलने जाते तो गली के बच्चों के लिए टॉफी लेकर जाते थे, थोड़ा हकलाते थे, बच्चे उन्हें अक्सर हकले बाबा भी कहते थे, वो बच्चों के साथ बिल्कुल बच्चे बन जाते थे। दोनों वृद्ध दम्पति अपने जीवन में बहुत खुश हैं, बस कमी है तो बच्चों की। शिवशंकर के एक पुत्र व दो पुत्रियाँ थी जिनमें से एक पुत्री की मृत्यु हो जाती है। बेटी के दो पुत्र थे जिनमें से एक को अपने पास रखने की ललक बतायी गई थी, वहाँ भी वह ललक बचकानी मानी गई। उनका बेटा पुनीत है। जिसके एक लड़का और लड़की है। वे पुनीत से कहते हैं "बेटा पुनीत, बात यह है कि बड़े-बूढ़ों के लिए बच्चे बगीचे में खिले फूल होते हैं रंग-बिरंगे, या फिर सुंदर खिलौने। उनके बीच रहने से अंदर का दुख-तकलीफ, अवसाद, थकान सब गायब हो जाता है। पुराने लोगों का कहना है कि नन्हें-मुन्नों से आँगन चहकता

है, घर-घर मालूम होता है। पापा सेंटिमेंट्स अपनी जगह और बच्चों का भविष्य अपनी जगह। बुद्धिमानी यही है कि भविष्य को लेकर कोई समझौता नहीं किया जाए।¹⁰ बेटा-बेटी, छोटे-बड़े अंतरालों में, छुट्टियों या दूसरी वैसी प्राप्त सुविधाओं में छोटी अवधि के लिए घर आ जाते थे। गाँव के मकान को जब वे अपने पिता की नाजायज औलाद के नाम करते हैं तो उनका बेटा पुनीत भड़क जाता है, उसके लिए पैसा सब कुछ है। इसी पैसे के लिए वह अपने माता-पिता को बड़ी चालाकी से अपने पास ले जाता है। इसी बीच शिवशंकर पुलिया के बैठक में साथियों को बेटे के पास 5-6 माह जाकर रहने की बात बताते हैं। अपने पुत्र के बहकावे में आकर माँ, शिवशंकर को मना तो लेती हैं किंतु उनके जीवन के सुख वहाँ जाकर दुख में बदल जाएँगे, ऐसा शिवशंकर ने सोचा नहीं था। “अवसर मिल-मिलते ही बीच-बीच में चक्कर लगाता रहूँगा। जड़ें तो मेरी यहीं हैं। आप लोगों का साथ कुनबे वाला साथ है।”¹¹ ये मात्र घर से माता-पिता को निकालने की सोची समझी-चाल थी। शिवशंकर के जाते ही पुनीत उनका घर बेच देता है। “घर क्यों बेच रहे हो? यह तो यह तो ठीक नहीं।” आगे शिवशंकर यह भी कहते हैं “तू शुरु से ही बड़ा शरारती रहा है। चालाकी तेरी नस-नस में है। एक ढेले से तूने दो-दो शिकार किये हैं। किल्ड टू-टू बर्ड्स विद वन स्टोन। अंग्रेजी की वह कहावत इसी तरह है न।” वह उन्हें सांत्वना भी देता है और उनसे कहता है कि अगर वो लौटना चाहे तो वो दूसरा मोल का मकान ले देगा किंतु होता इसके विपरीत ही है।¹² शिवशंकर, बेटे के कहने पर घर-बार बेचकर अपना अच्छा-खासा सामाजिक जीवन छोड़ उसके यहाँ रहना स्वीकार कर लेते हैं। उनकी असल त्रासदी यहीं से शुरू होती है। वे अपने जीवन के एकाकीपन और शहर के अजनबी माहौल में लगातार घुट रहे थे। एक बार सपने में गुप्ताजी कह रहे थे कि उन्होंने बेटा-दामाद को अपने घर में रखकर गलती की। भाई शिवशंकर वही गलती आपने अपना घर बेचकर बेटे के पास रहना स्वीकार कर ली। स्थिति यह है कि पहले उनका फोन स्विच ऑफ बता रहा था, कल-रात जब वृद्ध मित्रों ने फिर कोशिश की तब सन्देशा था, दिस नम्बर इज नॉट एक्जिस्ट। स्पष्ट है कि उपेक्षित और अकेला जीवन जीते-जीते वे मृत्यु को प्राप्त हो गए हों।

उपन्यास में तीसरे वृद्ध दिलीप चंद की कथा है। वे उन लोगों से अलग हैं जिनकी शादी तो हो जाती है लेकिन उनका वैवाहिक जीवन शुरू ही नहीं हो पाता है। पत्नी कहती है कि वह किसी ओर से प्रेम करती है और उसके पास जाने की इजाजत मांगती हैं। वे इजाजत दे देते हैं और स्वयं जीवनभर अविवाहित रहते हैं! दिन में धूप निकलने पर दिलीप चंद धूप का अधिक-से-अधिक सहचार्य करते थे। धूप की खातिर छत पर भी चले जाते थे। एक मिलने वाले ने पूछा था कि धूप का ताप वह कैसे सहन कर लेते हैं? उनका उत्तर था, “दोस्त का ताव-तेवर खलता नहीं है। उजाला मेरा पसन्दीदा दोस्त है।” बुढ़ापे में वे अब अपनी मौसी के साथ रहते हैं। ऐसा नहीं कि मौसी के परिवार नहीं था। परिवार तो भरा-पूरा था किंतु उसमें बड़ों के लिए संस्कार संस्तुति सिर्फ पैसा था। जब तक वो मिला तब तक खूब आदर सत्कार किया। मौसी भी कुछ इस अवस्था में दिलीप चंद के साथ रहने लगी थीं। मौसी का घर शहर के दूसरे छोर पर है। आकर रोने लगी थीं, आँसू ढरकाते हुए, कि वहाँ बेटे-बहुओं का दुर्व्यवहार अति हो गया है, बरदाश्त से बाहर। खाट पर पड़े पति के सामने ही यह दुर्व्यवहार था, मगर अब बेथाह हो गया है। “पति के न रहने पर औरत बिला औकात की हो जाती है, फूटा बासन या उतरन जैसी। खाने-पीने की मीठी, उम्दा चीजें छिपाकर रखी जाती हैं। बेटे बीच-बीच में हाल-चाल पूछने आ जाते थे और कभी काम होता तो ले भी जाते थे। अब कभी बुलाया जायेगा तो साफ मना कर दूँगी, खूब समझ गयी हूँ मतलबी हैं सब।”¹³ मौसी के मन में महीने-दो-महीने में अपने परिवार के प्रति हूक उठ जाती है। बच्चे कितने भी दुष्ट, चतुर, छल प्रपंच वालें हो किन्तु माता-पिता उनके लिए हमेशा आशीर्वाद की बौछार ही करते हैं, कहीं-न-कहीं वे इसके लिए स्वयं जिम्मेदार है। “सोचती हूँ, दो-चार दिन के लिए वहाँ भी हो आऊँ। आत्मा नहीं मानती है। आखिर अपनी कोख से जन्म दिये का रिश्ता है।”¹⁴ देश ने और क्षेत्रों में भले ही विकास न किया हो लेकिन छल-कपट, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार के क्षेत्र में जरूर ऐसा किया है। दिलीपचंद के साथ भी इस प्रकार की घटनाएँ घटती हैं जिनमें उनका किराया उन्हें न मिलकर उनकी दुकान बेच दी जाती है। “आप बहुत सीधे हैं। आज

के इस ज़माने में जिसमें झूठ, फरेब, धूर्तता, बेईमानी क़दम-क़दम पर है, आदमी का चाक-चौबन्द रहना निहायत ज़रूरी है। भोले बाबा बना आदमी इस तरह की ठगी वाले हादसे का आसानी से शिकार बन जाता है। ऐसा आदमी आज के चालू ज़माने में एक तरह से मिसफिट है।¹⁵ इस मूल्यहीन समय में वे अपने आप को मिसफिट पाकर आत्महत्या की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

इन सबकी अपेक्षा चिंताहरण शर्मा का व्यक्तित्व अधिक जीवंत है, किंतु वह अपने अन्य साथियों से भिन्न थे। यों तो यह भिन्नता उनमें से हरेक में थी, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे या तीसरे या किसी और का पूर्ण प्रतिरूप नहीं होता है, लेकिन चिन्ताहरण में यह भिन्नता मुखर थी। काया उनकी सामान्य थी, औसत कद काठी वाली। चेहरे पर झुर्रियाँ भी थीं, लेकिन इन झुर्रियों में बुझेपन की बजाए जीवंतता की चमक थी। उन्हें किसी से कोई मतलब नहीं, अपने आप तो जीते हैं साथ-साथ अपनी पत्नी को भी बुढ़ापे के दुखों से दूर रखते हैं।। “बेटे, बेटियों को पाला-पोसा, बड़ा किया। उनका अपना परिवार बसा दिया। मेरा पितृधर्म पूरा हो गया। जिन्दगी का एक बड़ा हिस्सा बच्चों पर सर्फ़ कर दिया। मैडम, अब जो बचा है, उसे अपने पर सर्फ़ कर लेने दीजिए। निजी जिन्दगी को लेकर भी तो कुछ धर्म होता है कि नहीं? पशु-पक्षी अपने जायों को खुद अपनी सुध लेने लायक बनाकर उनकी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं। तुम फुर्र, हम फुर्र।”¹⁶ पूँजी से संचालित इस समय की क्रूरता, भयावहता और मूल्यहीनता को एक रचनात्मक कृति के माध्यम से सामने लाने में उपन्यासकार बहुत हद तक सफल रहे हैं। कथा विन्यास को संयोजित करने में उन्होंने एक परिपक्व दृष्टि दिखाई है। पुरानी और नई पीढ़ी की जीवन स्थिति और सोच को उन्होंने साथ-साथ रख दिया है जिससे मूल्यों के विघटन की पूरी तस्वीर खुद-ब-खुद उभरकर सामने आ जाती है।

समाज का माहौल घर की सोच और दिशा को प्रभावित करता है। बच्चों का समाजीकरण भी इस प्रकार हो रहा है कि उनमें बुजुर्गों के प्रति कोई सहानुभूति विकसित नहीं हो रही है। “ग्रांड फादर बहुत गन्दे रहते हैं। कपड़ों में पेशाब कर देते हैं।” “दादा जी एक बिग प्रब्लम फार यू एंड योर फैमिली।”¹⁷ वह हँस दिये। आजकल के बच्चे बड़ों की बातों को कोई महत्व नहीं देते हैं। इसका कारण बच्चे के माता-पिता का दादा-दादी के प्रति किया गया व्यवहार है, बच्चा उन्हीं को देखकर आगे बढ़ता है। अतुल न छिपाकर अपनी कनपटी के पास अँगुली से गोल-गोल घुमाया था। उसने दोस्तों से चलने का भी इशारा किया था। वे तीनों फूट निकले। उन्होंने सामने मौजूद पत्नी की ओर देखते हुए वैसे ही अपनी कनपटी के पास गोल-गोल घुमाया, “मेरी खोपड़ी का पेच ढीला हो गया है।” पोते के अपहरण होने पर तुरंत बेटा 20 लाख रुपये देकर अपने बेटे को छुड़ा लाता है। एक ही घर में रहते हुए बाप-बेटा एक-दूसरे से दूरी बनाए रखते हैं। दोनों की स्थिति घड़ी की उन दो सुईयों की भाँति थी, जो एक-दूसरे से जुड़ी होने के बावजूद फासला बनाकर चलती हैं और बीच में कभी-कभी मिलती भी है तो यह मिलना न मिलने जैसा होता है। वे अपने बेटे से अच्छे से वाकिफ़ थे। यदि पोते का अपहरण हुआ था तो उनके बेटे के कारण ही हुआ था। अपहरण का पाया पैसा अपहरण में निकल गया। पाप भी अपनी सजा भुगतता है, भले ही कुछ देर से।¹⁸ चिंताहरण जिन्दादिल इंसान थे, धोखाधड़ी, जालसाजी से वह हमेशा दूर रहते थे “लेकिन मैं तो झूठ बोलूँगा नहीं। मुझसे कोई पूछेगा मैं बता दूँगा।” चिंताहरण ने कहने में देरी नहीं की। इस कहे में यह भी शामिल कर दिया, “तुम तो जानती हो कि मेरे लिए वही सही है जो मुझे सही लगता है। दूसरों के इस सही के अस्वीकार की मुझे परवाह नहीं।”¹⁹ किसी भी तरह का भय उन्हें नहीं था चाहे तो मृत्यु ही क्यों न हो जीवन को वह बड़े आनंद से जीते थे।

गुप्ता जी जब उन्हें मरने की बात कहते हैं तो भी वे उन्हें हौसला देते हैं। चिन्ताहरण बोले, “मौत का जिक्र ज़बान पर मत लाइए। मैंने पहले भी आपको इस बाबत एक शेर सुनाया था। अब उसे फिर सुना रहा हूँ। मौत को इस शेर को सुनाकर चलता करते रहिए।

फुरसत के वक़्त मिलना कभी मुझसे ऐ क़जा,
तुमको भी काम है अभी, मुझको भी काम है।”²⁰

पुलिया से धीरे-धीरे सबके नाते टूट चुके थे। चिन्ताहरण अपने रंग में आते हुए पाँचवे शख्स से बोलते हैं, “दिमाग में आता है कि क्यों न खाली हो गये तीन साथियों के रिक्त स्थानों को भरने के लिए समाचार-पत्र में विज्ञापन निकाला जाए। पात्रता की शर्तें, जिनके लिए हिन्दी में अब अर्हता शब्द प्रचलित है, आपकी राय में क्या होनी चाहिए?”²¹ लेकिन वह अपनी इस इच्छा को पूरा नहीं कर पाते हैं। एक दिन सुबह की सैर करते समय चिन्ताहरण का अपहरण हो जाता और उनका बेटा उन्हें छुड़ाने में कोई सक्रियता नहीं दिखाता, पुत्र के अपहरण होने पर जहाँ 20 लाख बदमाशों को दे देता है पर पिता के लिए एक बार भी नहीं सोचता। अंततः उनकी गति भी अपने अन्य तीनों मित्रों के जैसी ही हो जाती है।

उपन्यास में इन सत्तर पार चार बुजुर्गों की कथा के माध्यम से हृदयेश ने भारतीय समाज में हो रहे बदलावों को भी रेखांकित करने की कोशिश की है। ‘चार दरवेश’ चार वृद्धों— रामप्रसाद गुप्ता, शिवशंकर, दिलीपचंद और चिन्ताहरण के जीवन पर केंद्रित उपन्यास है। पाँचवे व्यक्ति के रूप में स्वयं कथाकार की उपस्थिति है। ये वृद्ध सूखे नाले की पुलिया की मुंडेर पर रोज सांय में बैठकर अपने दुख-सुख के साथ ही अपने अतीत को कुरेदते हैं, वर्तमान को कोसते हैं और समय के साथ हुए बदलाव का खाका भी खींचते जाते हैं जिससे जिंदगी में आ रहे भौतिकवादी बदलाव की ओर संकेत भी करते हैं। यह उपन्यास वृद्ध जीवन की विवशता, लालसा एवं विषाद को बड़े ही सशक्त ढंग से सामने रखता है।

वस्तुतः उपन्यासकार ने एक दारुण यथार्थ से हमारा साक्षात्कार कराया है। उस यथार्थ से जिससे हम सब भी घिरे हुए हैं। बीसवीं सदी के समाज में बदलाव बहुत तेजी से हुआ है। आधुनिक समय में हुए इन बदलावों में भारतीय परिवार व्यवस्था को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है। परिणामस्वरूप एक ओर जहाँ संयुक्त परिवार विखंडित हुए हैं तो दूसरी ओर मानवीय मूल्यों का भी विघटन हुआ है। पारिवारिक रिश्तों में बेगानापन बढ़ता चला गया है। जिसका सबसे अधिक खामियाजा परिवार के बुजुर्गों को उठाना पड़ा है। हृदयेश ने ‘चार दरवेश’ उपन्यास में इसी समस्या को उठाया है। उपन्यास के चार वृद्ध पात्र इसी विसंगति का शिकार हैं। जिनके जीवन का घटनाक्रम अलग-अलग परिस्थितियों से गुजरता हुआ एक जैसी नियति को प्राप्त होता है। उपन्यासकार हृदयेश इन सभी की जीवन व्यथाओं के माध्यम से आधुनिक समय व समाज की सच्चाई व भयावहता को अभिव्यक्त करने में पूर्ण सफल रहे हैं।

संदर्भ

1. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्सटीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ0सं0—7
2. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्सटीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ0सं0—9
3. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्सटीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ0सं0—76
4. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्सटीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ0सं0—16
5. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्सटीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ0सं0—96
6. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्सटीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ0सं0—117

- 96